रमेश थानवी

दौड़ा दौड़ा मन का घोड़ा

रमेश थानवी

दौड़ा दौड़ा मन का घोड़ा

वाणी प्रकाशन
21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
द्वारा प्रकाशित

चतुर्थ संस्करण 2001

मूल्य : 20.00

शुभम ऑफसेट, दिल्ली-110032
में मुद्रित

DOURA DOURA MAN KA GHORA
(Poems by Ramesh Thanavi)
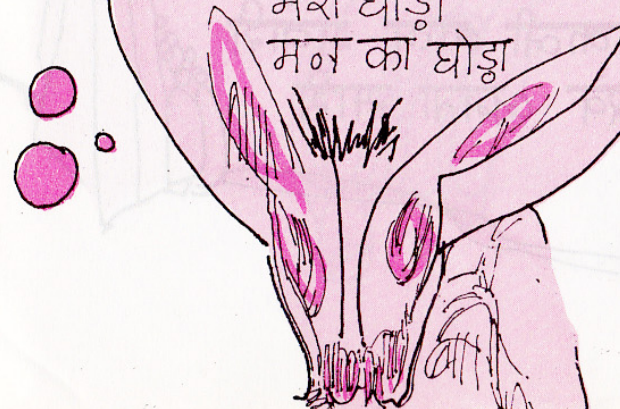
पापा बन गये घोड़ा

हम जब बने सवार
पापा बन गये घोड़ा
हमने की असवारी
झूला खाया घोड़ा

हम जब बने सवार
मम्मी बन गयी गाड़ी
हमने की असवारी
दौड़ी घोड़ा-गाड़ी

पापा बन गये घोड़ा
मम्मी बन गयी गाड़ी
निकली बाल-सवारी
देखे जनता सारी
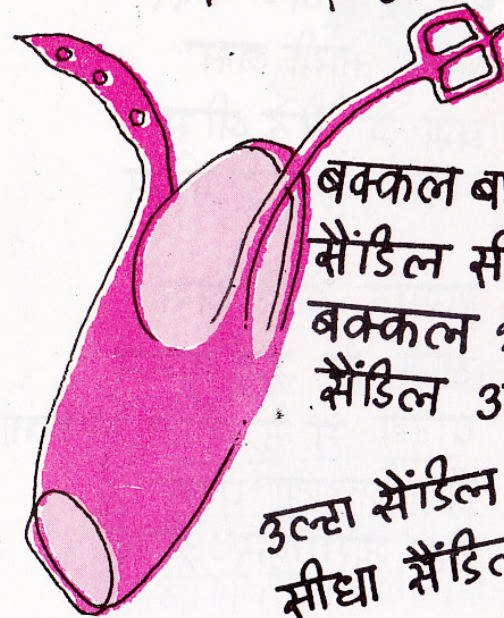
सीधा सैंडिल

बक्कल बाहर
सैंडिल सीधा
बक्कल भीतर
सैंडिल उल्टा
उल्टा सैंडिल हमें गिराता
सीधा सैंडिल दौड़ा जाता
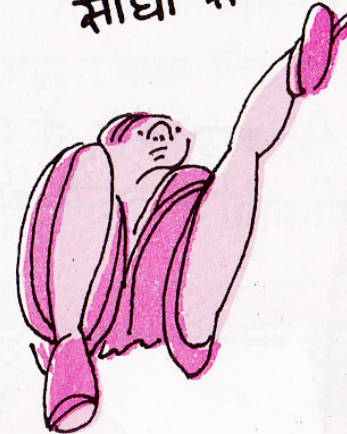
सरपट दौड़ी बस

घड़ी में बज गये दस
बाहर आयी बस
बस में बैठे बीस
नहीं चुकाई फीस

सरपट दौड़ी बस
आगे हो गयी फस्स
पहिये में से काँटा निकला
ठीक कराया पंचर
बैठे मुसाफिर अंदर

चढ़ बैठे थे दस
दौड़ चली थी बस
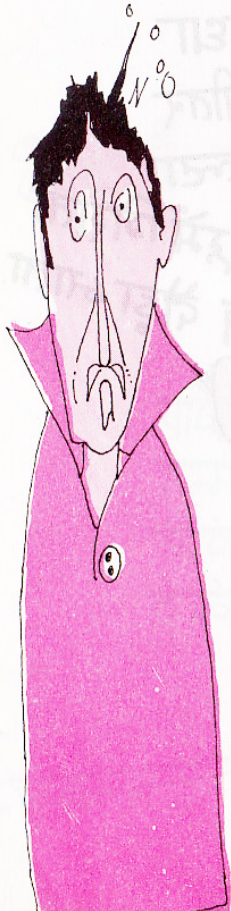
बस में बैठे बीस

॥६॥

पापा गये जलेबी लेने

पापा गये जलेबी लेने
नहीं जलेबी लाये
मिली नहीं थी गरम जलेबी
खाली हाथों आये

एक बहाना और लगाया
भीड़ पड़ी थी भारी
बहुत देर से नंबर आया
बिकी जलेबी सारी

असल बात जो नहीं बताई
वह थी मोटी मेंहगाई
कैसे आये गरम जलेबी
जब छाई हो तंगाई

यही वजह थी मेरे पापा
खाली हाथों आये
गये थे लेने गरम जलेबी
नहीं जलेबी लाये

॥७॥
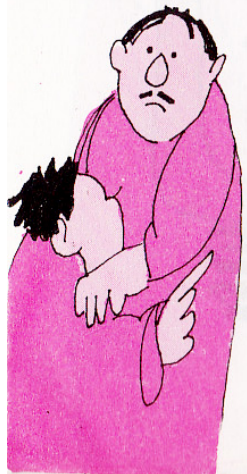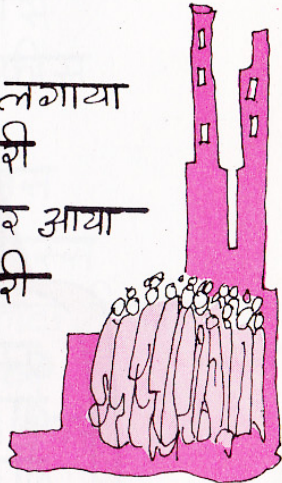
अक्कल का ताला

कैसा ताला है ये बोलो
चाबी इसकी कहाँ गयी?
अब तुम इसको कैसे खोलो
खोजो अटकल नयी नयी

बहुत पुराना ताला है ये
बाबा आदम ने बनवाया
जाने कब से बंद पड़ा ये?
हमने था सबसे पुछवाया

जबसे हमने सबसे पुछवाया
एक टके का उत्तर पाया
ताला एक पुराना है ये
इसको आदम ने बनवाया
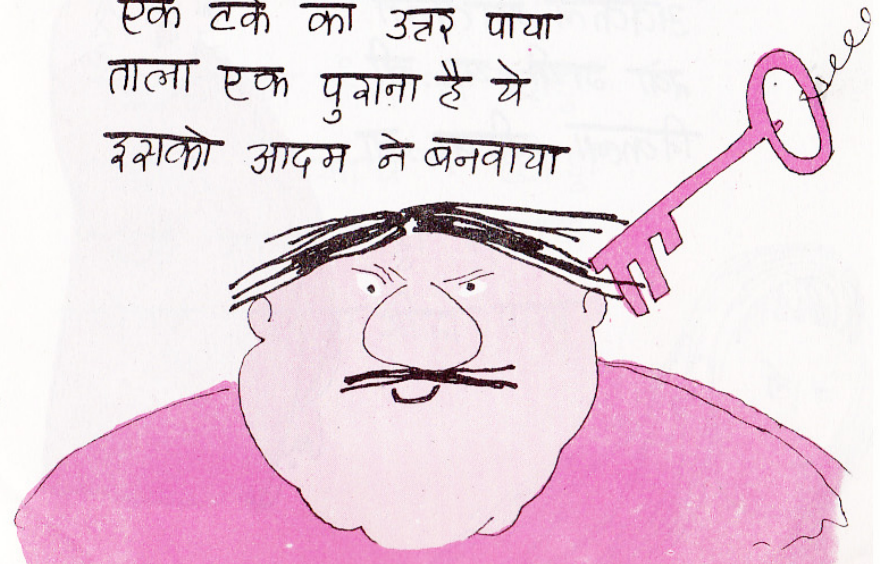
॥८॥

आदम की बीवी थी हौवा
उसको चाबी सौंपी थी
हम सब थे हौवा के बच्चे
हमने चाबी खोई थी

ये तो था अक्कल का ताला
बुद्धि इसकी चाबी थी
अक्कल पर जब पड़ा था ताला
बुद्धि भीतर बैठी थी

बुद्धि की चाबी
अक्कल का ताला
खो गयी चा...बी
निकला दिवा...ला

॥९॥
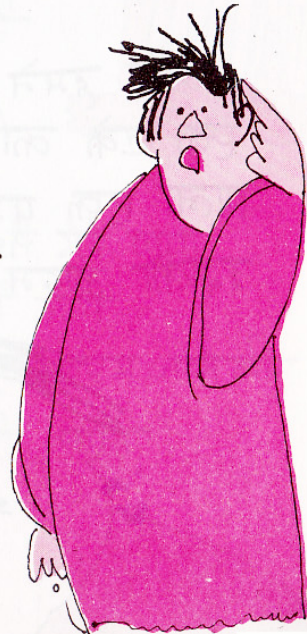
जूं

मेरे सिर में जूं बैठी थी
चुपके चुपके वो बैठी थी।
छुपके दुबके वो बैठी थी।
मेरे सिर में जूं बैठी थी।

मैंने पूछा कहाँ से आयी?
मेरे सिर में कहाँ से आयी?
जूं बोली - "मैं उड़ कर आयी
मक्खी रानी संग ले आयी"

मक्खी ने कंघी में छोड़ा
कंघी ने माथे में छोड़ा
तेरा माथा बड़ा सुहाया
लहू तुम्हारा मीठा पाया

||१०||

मैंने अड्डा यहीं जमाया
सारा कुनबा यहीं बसाया
सबने पूरा भोजन पाया
तेरा माथा बड़ा सुहाया

जो चुपके से घर में आये
छुप कर लहू हमारा पीये
सदा पराये धन पर जीये
वो भी जग में जूँ कहलाये।
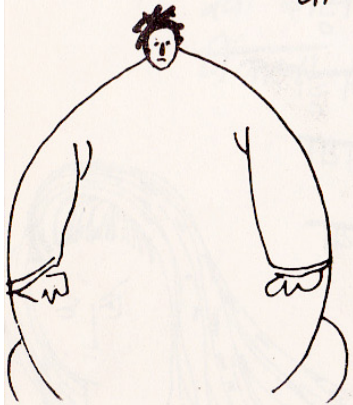
||११||

उड़ी पतंग जी उड़ी पतंग
रंग बिरंगी एक पतंग
उड़ती चली डोर के संग
हम भी उड़े पतंग के संग
धरती पर थे पाँव हमारे
पर मन उड़ा पतंग के संग
उड़ी पतंग जी उड़ी पतंग
सबका मन उड़ता जाता था
धरती से रिश्ता नाता था
बँधे हुए थे एक डोर से
बँधे हुए थे छोर-छोर से
बँध कर भी उड़ता आया था
उड़ कर भी जुड़ना आया था
उड़ी पतंग जी उड़ी पतंग

यूँ हम उड़े पतंग के संग
हम सब जुड़े पतंग के संग
उड़ी पतंग उड़ी पतंग।

उड़ी पतंग

||१२||

आसमान ने ओढ़ी चादर

आसमान ने ओढ़ी चादर
नीली नीली इसकी चादर
साँझ पड़े यह लाल हुयी थी
रात पड़ी तो काली चादर

आसमान ने ओढ़ी चादर
नीली नीली काली चादर
रात पड़ी तो पोल खुली थी
फटी हुयी थी सारी चादर

जगह जगह पर छेद थे इसमें
चलनी सी छेदीली चादर
छेद सभी जब बने थे तारे
चमकी थी ये काली चादर

चमकी थी ये काली चादर
सबके मन को भायी चादर
आसमान ने ओढ़ी चादर
नीली लाली काली चादर

||१३||

टिक टिक घोड़ा

टिक टिक घोड़ा
छुक-छुक गाड़ी
अपनी सवारी
चली अगाड़ी

टिक-टिक घोड़ा
छुक छुक गाड़ी
एड़ लगाई
झंडी दिखाई
दोनों दौड़े चले अगाड़ी

गुन गुन की गाड़ी
चली अगाड़ी
गाँव शहर सब
रहे पिछाड़ी
टिक टिक घोड़ा, छुक-छुक गाड़ी

॥१४॥
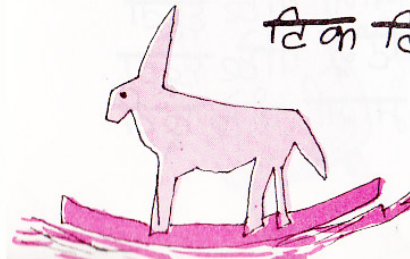
नहीं नींद का टिकट कटाया

गुनगुन गाड़ी में जा रही थी
मामा टेसन आये थे
मामी टेसन आयी थी
मासी टेसन आयी थी
टिंगू टेसन आया था
गुनगुन गाड़ी में खड़ी थी
सब लोग बाहर खड़े थे

गुनगुन की गाड़ी ने सीटी दी थी
गार्ड ने सीटी बजाई थी
झंडी हिलाई थी
गाड़ी चलपड़ी थी
मामा पीछे छूटे
मामी पीछे छूटी
टिंगू पीछे छूटा
मासी पीछे छूटी
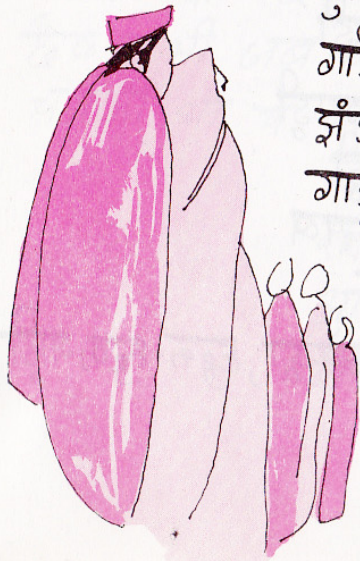
॥१५॥

गाड़ी अगाड़ी जा रही थी
लोग पीछे छूट रहे थे
लोग पीछे छूट रहे थे
गाड़ी अगाड़ी जा रही थी

गाड़ी चल रही थी
दिन में चल रही थी
रात में चल रही थी
सुबह चल रही थी
शाम चल रही थी
गुनगुन के पास टिकिट था
गुड़िया के पास टिकिट था
छोला के पास टिकिट था
सबके पास टिकिट था
सब बैठे थे
गाड़ी चल रही थी
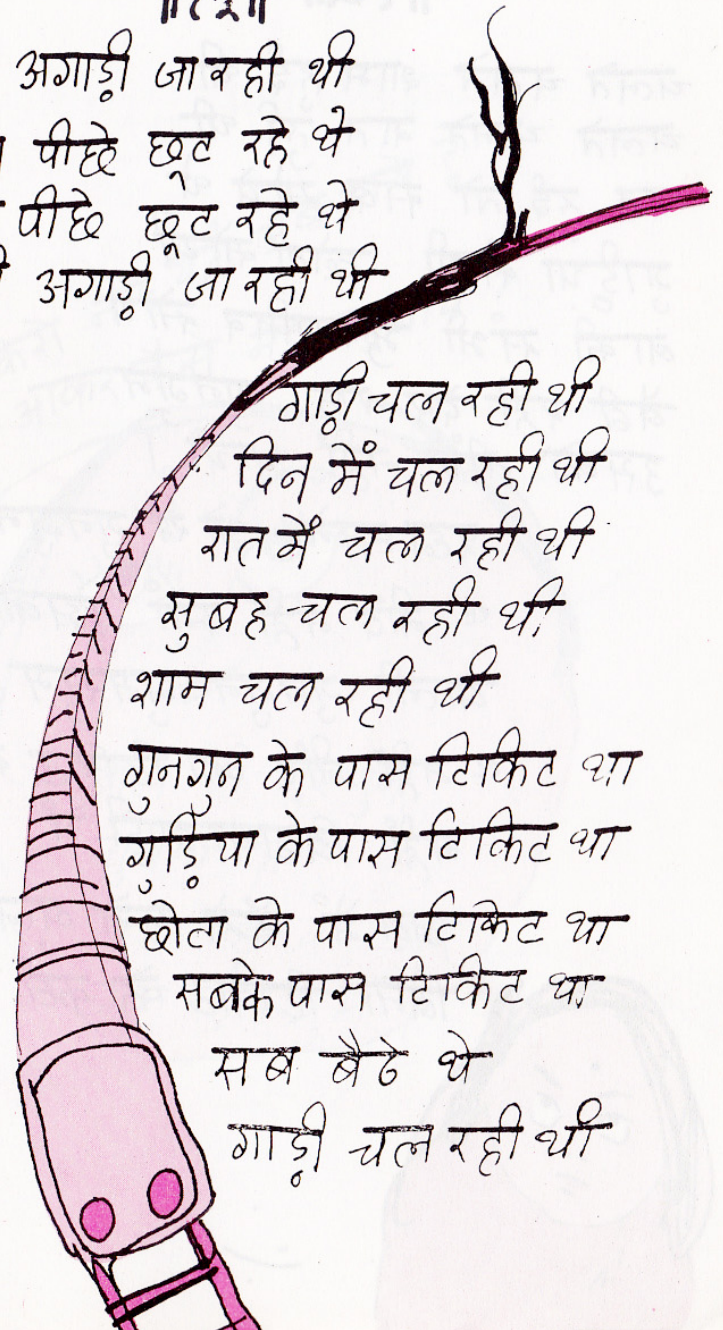
चलते चलते शाम हुई थी
चलते चलते रात हुई थी
रात हुई तो सब सोये थे
गुड़िया सोयी छोटा सोयी
बाकी सभी मुसाफिर सोये
बैठी रही देर तक गुनगुन
उसको नींद नहीं आयी।

पूछा हमने– ओ री गुनगुन
"नींद नहीं क्यों तुझको आयी?
बोली गुनगुन गुमसुम होकर--
"नहीं नींद का टिकिट कटाया
नहीं बिठाया गाड़ी में
अब मैं कैसे उसे बुलाऊं?
बिना टिकिट के कहां बिठाऊं
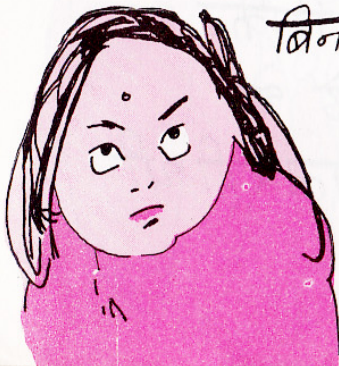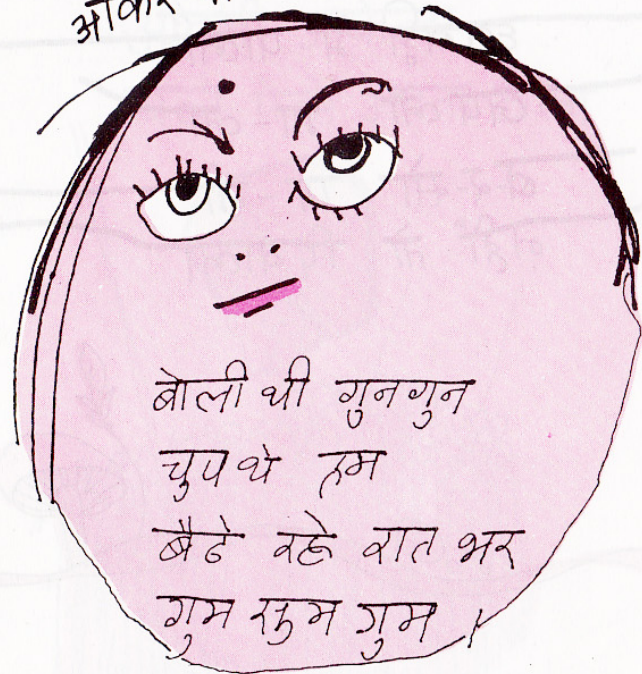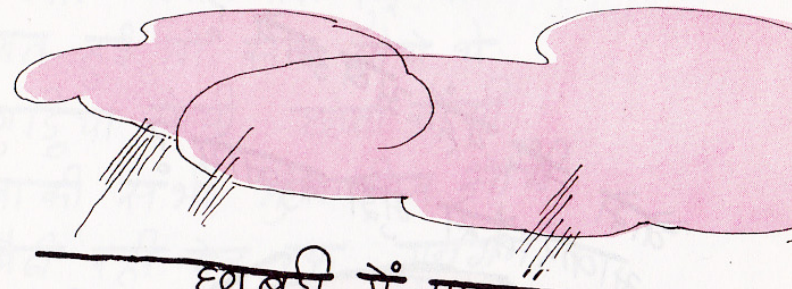
बरसो पानी

छाबड़ी में पाला
जप लो मा-ला
ब-र-सो पा-नी
नहीं तो दिवाला
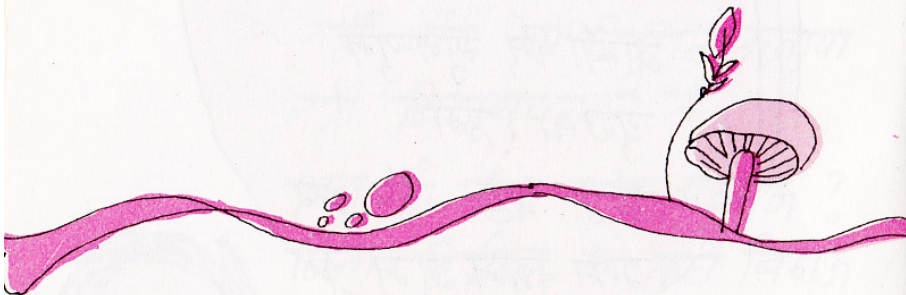
ठेले पे ठेला

ठेले पे ठेला
लोगों का रेला
आदमी अकेला
पेले पेले अपना ठेला
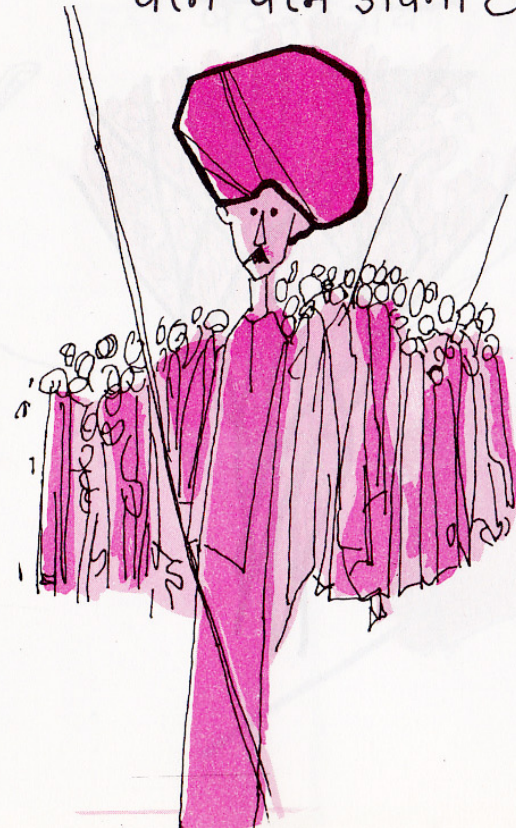
॥२०॥

पिसती मेंहदी

पिसती मेंहदी
देती रंग
रहती अपने
हरदम संग

॥२१॥

घूमा लट्टू

घूमा लट्टू
नाचा लट्टू
बैठे रह गये
सभी निखट्टू

||२२||
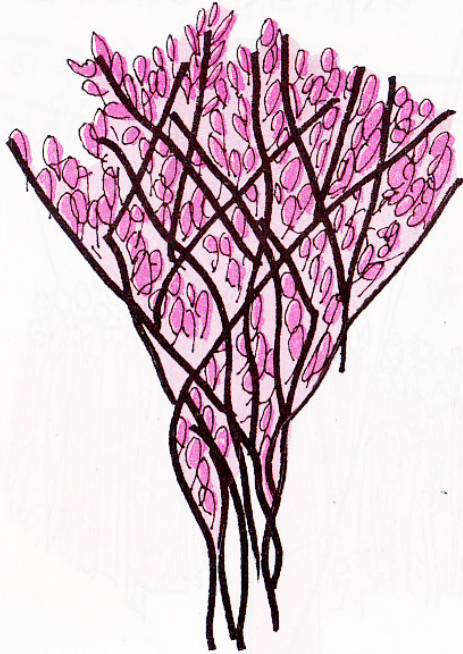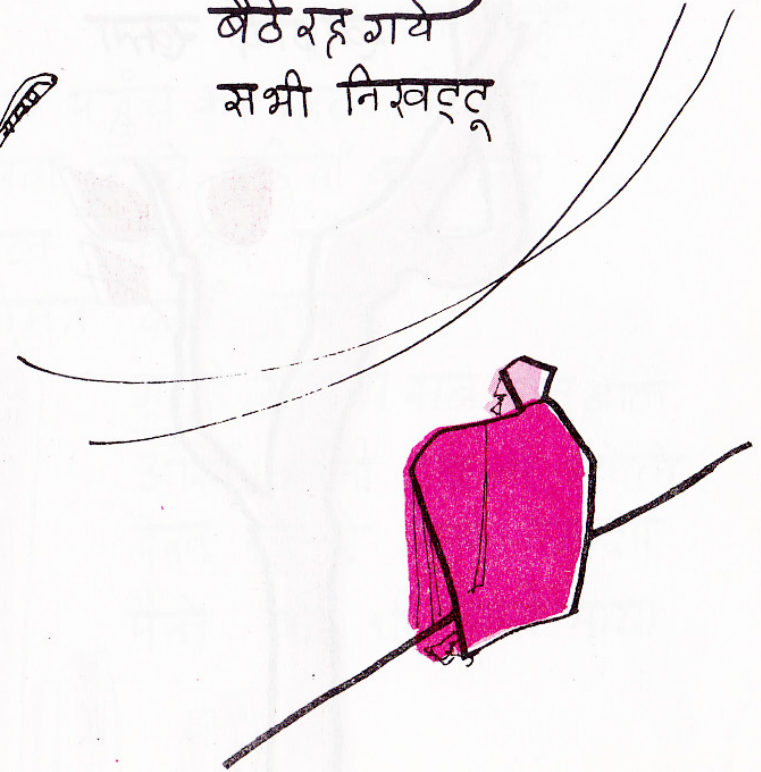
पेड़ पर पत्ता

पेड़ पर पत्ता
पत्ते का लत्ता
पहना लत्ता
खा गये खत्ता

||२३||
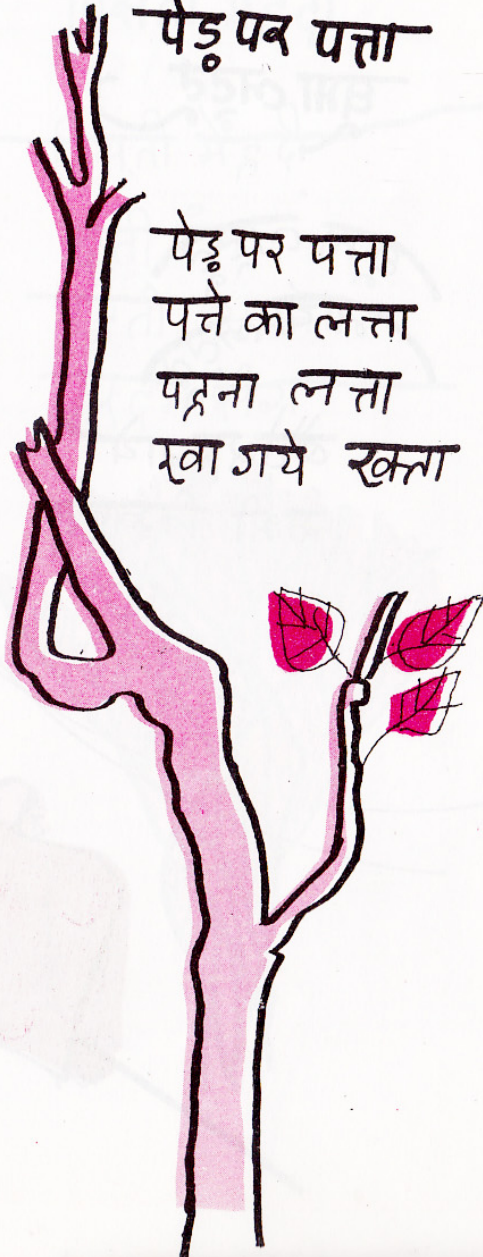
गुड्डा था हैरान गुड़िया परेशान

गुन गुन जी !
याद आपकी साथ लिये हम
हैम्बर्ग आ पहुंचे हैं
पढ़ने की मंशा से हमने
डेरे दूर जमाये हैं

यहाँ पहुंच कर पहले ही दिन
देखा हमने गुड़ियों का बाजार
मोल देख कर सिर चकराया
कीमत दसों हजार

गुड्डे गुड़िया सब बिन बोले
आँखें अपनी तब भी खोले
देख रहे थे खेल तमाशा
पैसे की थी सारी माया

॥२४॥

गुड्डा था हैरान, गुड़िया परेशान
पैसों मे मेरा मोल भला क्यूँ/करते हो श्रीमान
पापा भी उदास
गुड्डे गुड़िया सभी उदास
ऐसे बाजारों से बोलो
कौन करेगा आस ?